बरोदा ने दिखायी खट्टर की औकात

कांग्रेस ने न सिर्फ जीत का अंतर बढ़ाया, बल्कि अपना वोट प्रतिशत भी ठीक किया

यूसुफ किरमानी

बिहार चुनाव नतीजों की उठापटक की आड़ में हरियाणा के एकमात्र बरोदा उपचुनाव के नतीजे पर किसी ने तवज्जो नहीं दी। विवादास्पद कृषि कानूनों के लागू होने के फौरन बाद कृषि प्रधान राज्य हरियाणा में

हुए इस चुनाव पर बीजेपी आलाकमान की खुद नजर थी। सोनीपत जिले में आने वाले बरोदा उपचुनाव में कांग्रेस के इंदु राज ने अंतरराष्ट्रीय पहलवान और बीजेपी प्रत्याशी योगेश्वर दत्त को हराया है। यहां पर कांग्रेस की जीत अपनी जगह महत्वपूर्ण है लेकिन केंद्र सरकार की किसान विरोधी नीतियों और मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर की अलोकप्रियता पर बरोदा ने मुहर लगा दी है। इस नतीजे से कांग्रेस में पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा का खेमा और मजबूत हो गया है। बरोदा के दंगल में बीजेपी ने अंतरराष्ट्रीय पहलवान योगेश्वर दत्त को फिर से उतारा था लेकिन वह लगातार दूसरी चुनावी कुश्ती भी हार गए। हालांकि इस बार बीजेपी का कांग्रेस से सीधा मुकाबला था। इनैलो (आईएनएलडी) नाममात्र के लिए मैदान में थी। योजना यह थी कि बरोदा में जीतने पर बीजेपी इसे किसानों का कृषि कानूनों पर समर्थन बताकर प्रचार करने वाली थी। इस उपचुनाव में भी अयोध्या में मंदिर और कश्मीर से धारा 370 हटाने का खूब प्रचार किया गया, लेकिन मतदाताओं ने उन मुद्दों की तरफ देखा ही नहीं।

विजयी इन्दु राज नरवाल : **हुड्डा के चक्रव्यूह में फंस गयी भाजपा**

बहुत कुछ बताता है वोट प्रतिशत

बरोदा उपचुनाव में भाजपा का प्रदर्शन पिछले विधानसभा आम चुनाव 2019 से भी इस बार बदतर है। 2019 के चुनाव में इस सीट पर बीजेपी प्रत्याशी योगेश्वर दत्त कांग्रेस के कृष्णमूर्ति हुड्डा से 4,840 मतों से हारी थी लेकिन इस बार बीजेपी के उन्हीं योगेश्वर दत्त को कांग्रेस के इंदु राज ने 10566 मतों से हराया। 2019 के चुनाव में जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) ने भी चुनाव लड़ा था यानी मुकाबला त्रिकोणीय भी था। लेकिन इस बार तो बीजेपी की मदद के लिए जेजेपी सुप्रीमो दुष्यंत चौटाला बरोदा के जाट बहुल गांवों में झोली फैलाकर वोट मांगने पहुंचे थे। कांग्रेस ने इस उपचुनाव में अपने मत प्रतिशत के सारे रेकॉर्ड तोड़ दिए। कांग्रेस प्रत्याशी को 49.28 फीसदी वोट मिले हैं, जो अब तक सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। बीजेपी को 40.70 फीसदी वोट मिले हैं।

2014 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी 33.20 वोट प्रतिशत हासिल कर अपने दम पर 47 सीटें जीतकर सरकाई बनाई थी लेकिन 2019 के विधानसभा चुनाव में 36.5 फीसदी वोट लेकर वो 36 सीटें हासिल कर सकीं और फिर नाटकीय घटनाक्रम में जेजेपी से गठबंधन कर सरकार बना ली। कांग्रेस अपना वोट प्रतिशत लगातार बेहतर कर रही है। बरोदा ने भी इस संकेत को दोहराया है।

हार के खास फैक्टर

उपचुनाव के दौरान इस संवाददाता ने देखा था कि बरोदा में प्रधानमंत्री मोदी के पोस्टर लगाकर वोट मांगे गए थे। इसमें अक्टूबर में संसद से पास किए गए तीन कृषि कानूनों को हवाला था लेकिन किसान उतनी ही हिकारत से उन पोस्टरों को देखते थे। सितम्बर महीने में जब इन कृषि कानूनों को संसद में लाया जा रहा था तो उस समय सबसे पहले पंजाब और हरियाणा के किसानों ने इन कृषि बिलों का तीखा विरोध शुरू किया। पंजाब में और हरियाणा के सिरसा, अंबाला और करनाल में किसान रेल पटरियों पर बैठ गए। 10 सितम्बर को भारतीय किसान यूनियन ने किसानों की रैली कुरुक्षेत्र के पीपली कस्बे में आयोजित की। इस पर पुलिस ने लाठी चार्ज कर दिया। आरोप है कि किसानों को दौड़ा-दौड़ाकर पीटा गया। इसके बाद विरोध में जेजेपी के कुछ विधायकों ने अपनी ही सरकार का विरोध करते हुए किसानों का समर्थन कर दिया और उनके साथ धरने पर भी बैठ गए। बरोदा न सिर्फ जाट बेल्ट का महत्वपूर्ण इलाका है, बल्कि किसान बेल्ट का भी प्रमुख इलाका है। इसके आसपास गोहाना, इन्द्री, गन्नौर जैसी बड़ी कृषि मंडियां हैं। किसानों पर लाठीचार्ज की वजह से हरियाणा के किसान नाराज हो गए।

उपचुनाव में प्रचार के लिए खट्टर मंत्रिमंडल का कोई ऐसा मंत्री नहीं बचा था जो वहां नहीं पहुंचा। अंतिम चरण में मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर वहां चार दिन जमे रहे और बरोदा के लगभग हर गांव में पहुंचे। खट्टर के वहां पहुंचने से यह मामूली उपचुनाव और भी खास बन गया। बीजेपी ने जाट बेल्ट की इस सीट में एक दांव और भी खेला है। उसने इस मुकाबले को जाट बनाम गैर जाट बनाने की कोशिश की। बीजेपी ने जानबूझकर गैर जाट प्रत्याशी योगेश्वर दत्त को इस चुनाव में उतारा। कांग्रेस प्रत्याशी जाट हैं। इससे जाटों में यह संकेत गया कि बीजेपी जानबूझकर इस समुदाय को हाशिये पर लाना चाहती है। उपचुनाव में रिपोर्टिंग के दौरान मतदाताओं में बीजेपी प्रत्याशी को लेकर कोई ललक या उत्साह नहीं दिखा। हालांकि योगेश्वर दत्त के खाते में 2012 ओलिंपिक का कांस्य पदक दर्ज है, जिसका बीजेपी ने जबरदस्त प्रचार भी किया लेकिन बरोदा के बेरोजगार युवा मतदाताओं ने इस पर ध्यान ही नहीं दिया।

हुड्डा का चक्रव्यूह

इंदु राज को कांग्रेस का टिकट दिलाने से लेकर खुद प्रचार की कमान संभालने और अपने खास समर्थकों को बरोदा बुलाकर सभी को छह-छह गांव की जिम्मेदारी सौंपकर पूर्व सीएम भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने बरोदा को जीतने के लिए तगड़ी व्यूह रचना की थी। बरोदा की रैलियों में हुड्डा बस एक ही बात कहते थे - मेरा यह आखिरी चुनाव है। उसके बाद अगली पीढ़ी मोर्चा संभालेगी।...यह उपचुनाव मेरी इज्जत का सवाल है। बरोदा में जो पोस्टर दिखे उसमें हुड्डा के बेटे दीपेन्द्र सिंह हुड्डा को खासतौर पर प्रोजक्ट किया गया था।

भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने बरोदा के एक-एक गांव को किसी न किसी पूर्व कांग्रेस विधायक या मौजूदा विधायक के जिम्मे सौंपा था। मसलन तिगांव (फरीदाबाद) के पूर्व विधायक ललित नागर, पूर्व विधायक महेंद्र प्रताप सिंह के बेटे विजय प्रताप, नूंह के कांग्रेस विधायक आफताब अहमद को 6-6 गांव सौंपे गए थे। कांग्रेस नेता लखन सिंगला की ड्यूटी भी हुड्डा ने कुछ गांवों में लगाई।

इसी तरह गुड़गांव, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, करनाल, सिरसा, हिसार, हांसी आदि इलाकों के कांग्रेस नेता और कार्यकर्ता बरोदा में चारों तरफ फैल गए थे। इन सभी गांवों में दीपेन्द्र हुड्डा को ट्रैक्टर पर ले जाया जाता था, जिस पर पूर्व या वर्तमान कांग्रेस विधायक और उस गांव के प्रतिष्ठित जाट नेता सवार रहते थे।

हरियाणा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कुमारी शैलजा भी हुड्डा से तमाम मतभेदों के बावजूद बरोदा में प्रचार करने के लिए गईं। रणदीप सुरजेवाला ने भी इस उपचुनाव में हुड्डा से अपने मतभेद भुला दिये। लेकिन यह उपचुनाव हुड्डा खानदान की अगली पीढ़ी को स्थापित करने के लिए जाना जाएगा।

ओमप्रकाश चौटाला की चमक फीकी पड़ी

2014 के विधानसभा चुनाव से ही अपनी इज्जत गंवाती आ रही इनैलो (आईएनएलडी) ने कोई भी सबक न सीखते हुए इस उपचुनाव में भी अपना प्रत्याशी उतार दिया। इनैलो प्रत्याशी जोगेन्द्र सिंह मलिक को कुल 5003 वोट मिले और पार्टी के खाते में 4.07 फीसदी वोट आये। 2019 के विधानसभा चुनाव में बरोदा से इनैलो प्रत्याशी को 3145 वोट मिले थे। इनैलो से बेहतर प्रदर्शन तो लोकतांत्रिक सुरक्षा पार्टी के प्रत्याशी राजकुमार सैनी का रहा जिन्हें इस बार बरोदा में 5611 वोट मिले। हालांकि उन्हें दलित वोट काटने के मकसद से बरोदा में उतारा गया था, लेकिन उसमें कामयाबी नहीं मिली।

मलिक के चुनाव प्रचार के लिए ओमप्रकाश चौटाला पैरोल लेकर खुद बरोदा में चुनाव प्रचार करने पहुंचे। भ्रष्टाचार के आरोप में सजा काट रहे ओमप्रकाश चौटाला की रैलियां जाट बहुल इलाकों में कराई गईं। जाट युवा और बुजुर्ग साफा बांधकर चौधरी देवीलाल के बेटे चौटाला को देखने तो पहुंचे लेकिन भीड़ वोटों में तब्दील नहीं हो सकी। 2019 के विधानसभा चुनाव में इनैलो को अपने ही कुनबे से टूटकर बनी नई नवेली पार्टी जेजेपी के मुकाबले कम वोट मिले थे लेकिन इनैलो इतनी बड़ी पराजय के बाद किसी तरह का सबक सीखने को तैयार नहीं है।

इनैलो अभी भी ओमप्रकाश चौटाला को करिश्माई नेता मान रही है लेकिन वक्त के साथ उनकी चमक फीकी पड़ चुकी है। उन्हीं के भाई रणजीत सिंह बीजेपी में हैं और खट्टर मंत्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री का पद हासिल कर चुप बैठ गए हैं। ओमप्रकाश चौटाला ने अपनी विरासत यानी इनैलो अभय चौटाला को सौंप रखी है तो उन्हीं के दूसरे बेटे अजय चौटाला ने बगावत कर जेजेपी बना ली और अपने बेटों को कमान सौंप दी है।

जेजेपी और बीजेपी के रिश्तों में बढ़ेगी खटास!

करनाल (म.मो.) हरियाणा में बरोदा विधानसभा उपचुनाव में भाजपा की दस हजार से अधिक वोटों से हार का बम मुख्यमन्त्री मनोहर लाल खट्टर ने जेजेपी के सिर फोड़ दिया है।

मुख्यमन्त्री ने कहा कि बरोदा चुनाव में यदि जेजेपी की वोट भाजपा के पक्ष में डलती तो बरोदा में भाजपा को 80000 वोट मिलती, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

बरोदा में हार पर मुख्यमन्त्री के इस मलाल का दोनों दलों के रिश्तों में खटास आने की सम्भावना है। मुख्यमन्त्री के इस बयान के बाद जनता में जेजेपी को लेकर कांग्रेस के प्रचार में और तेज़ी आयेगी।

सरकार ने फरीदाबाद में चालान से कमाये 4 करोड़, सड़कों पर फिर गड्ढे क्यों ?

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद: शहर में पिछले आठ महीनों में करीब 4 करोड़ 25 लाख रुपये सिर्फ चालान के जरिए फरीदाबाद ट्रैफिक पुलिस ने वसूले। इसमें बिना मास्क पहने गाड़ी चलाने वालों का चालान भी शामिल है। लेकिन इन पैसों को अगर शहर की सड़कों पर और ट्रैफिक व्यवस्था को और बेहतर बनाने पर खर्च किया जाता तो शहर के हालात कुछ न कुछ जरूर सुधरते। हालांकि इन पैसों को खर्च करने का अधिकार न तो पुलिस को है और न ही जिला प्रशासन को। चालान के ये पैसे सिर्फ हरियाणा सरकार ही सड़कों के रखरखाव या अन्य मदो पर खर्च कर सकती है।

इस संबंध में दायर एक आरटीआई से पता चला है कि जनवरी 2020 से लेकर 8 अक्टूबर तक ट्रैफिक पुलिस ने फरीदाबाद में 62 हजार 295 चालान काटे हैं। इसमें व्यावसायिक वाहनों के अलावा बिना मास्क वाले ड्राइवरों का भी चालान शामिल हैं।

मार्च महीने में सबसे पहले जनता कर्फ्यू लागू किया गया और उसके बाद लॉकडाउन घोषित कर दिया गया। मार्च महीने में ट्रैफिक पुलिस को चालान के जरिये 69 लाख से ज्यादा रकम मिली। इसी तरह अप्रैल-मई-जून में पचास लाख से ज्यादा, जुलाई अगस्त में 80 लाख से ज्यादा पैसे चालान के मद में आये। जुलाई ऐसा महीना था जब फरीदाबाद ट्रैफिक पुलिस ने सबसे ज्यादा 18,170 चालान काटे थे।

शहरों की सड़कों की हालत किसी से छिपी नहीं है। फरीदाबाद नगर निगम के अफसर आकंठ भ्रष्टाचार में डूबे हैं। नेता कमीशन लेता है। नतीजा यह निकल रहा है कि या तो सड़कें बन नहीं रही हैं या फिर जो बन रही हैं, वो चंद महीनों में टूट जाती है। हालांकि ऐसा कोई नियम नहीं है कि ट्रैफिक चालान में मिले पैसे सड़कों पर खर्च किये जाते हों लेकिन फरीदाबाद पुलिस अपनी तरफ से ऐसा तो कर ही सकती है कि जहां उसे गड्ढे दिखाई पड़ें, उन गड्ढों को वो इन पैसों से भरवा दे। सितम्बर महीने में हार्डवेयर चौक से प्याली चौक जाने वाली सड़क पर युवा मैनेजर सचिन शर्मा की एक गड्ढे की वजह से मौत हो गई थी। अगर वो गड्ढा भरा होता तो सचिन की जान बच सकती थी। लेकिन इस हादसे से न तो एमसीएफ और न ही फरीदाबाद ट्रैफिक पुलिस को कोई सबक मिला। फरीदाबाद की सड़कों पर गड्ढों की वजह से सड़कों की हालत बदतर होती जा रही है। लेकिन इस तरफ दोनों ही एजेंसियों का ध्यान नहीं है।

फरीदाबाद ट्रैफिक पुलिस भी चाहे तो चालान के एवज में मिले पैसों का इस्तेमाल ज्यादा होमगार्ड तैनात करने या पेड वॉलंटियर्स की मदद ले सकती है। शहर में ऐसे तमाम प्वाइंट हैं, जहां ट्रैफिक की हालत बदतर है और जनता को काफी परेशानी उठानी पड़ रही है। इन पैसों का इस्तेमाल फरीदाबाद के ट्रैफिक को सुचारू बनाने के लिए किया जा सकता है। सड़कों पर आवारा जानवर बढ़ते ही जा रहे हैं। अधिकांश गोवंश के होने की वजह से जनता उन्हें मारपीट कर भगाती नहीं है। अगर कोई मारता-पीटता है तो तिलकधारी गोरक्षक उन्हें बचाने के लिए फौरन सामने आ जाते हैं। इंसान की जान की कीमत तिलकधारी गोरक्षकों के सामने कुछ भी नहीं है। हाल ही में ओल्ड फरीदाबाद की एक चक्की पर काम करने वाले बिहार के एक मजदूर ने जब गेहूं खा रही एक गाय को भगाया तो चश्मे की दुकान पर काम करने वाला एक गोरक्षक वहां पहुंच गया। उसने उस मजदूर को बाकायदा गाली देते हुए गाय को न भगाने के लिए कहा। चक्की मालिक अपने मजदूर के लिए कुछ नहीं बोला और तमाशा देखता रहा। इस तरह की घटनाएं फरीदाबाद में आम होती जा रही हैं। लेकिन फरीदाबाद पुलिस और ट्रैफिक पुलिस का ध्यान इस तरफ नहीं है।

बंसीलाल कुकरेजा मंदिर कमेटी में फिर बहाल

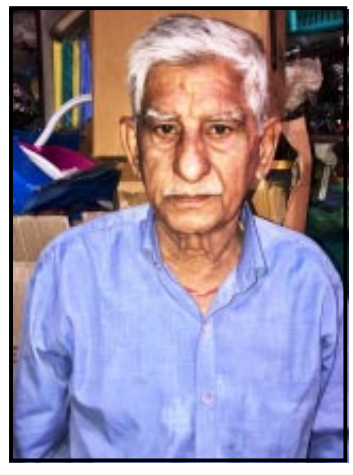

फ़रीदाबाद, (म.मो.) रजिस्ट्रार ऑफ़ सोसायटीज फरीदाबाद ने सनातन धर्म सभा द्वारा संचालित ताड़केश्वर शिव मंदिर का महासचिव बंसीलाल कुकरेजा को फिर से बहाल कर दिया है।

हाल ही में विधायक सीमा त्रिखा ने अपने प्रभाव का दुरूपयोग करते हुए बंसीलाल कुकरेजा को हटवाकर अपने चहेते सतनाम सिंह मंगल को ग़ैर क़ानूनी ढंग से नियुक्त कराना चाहा था। लेकिन उनकी यह चाल नाकाम हो गई।

रजिस्ट्रार सोसायटीज ने इस संबंध में सनातन धर्म सभा और मंदिर के मैनेजमेंट से जवाब तलब किया था। वहाँ से जवाब न आने पर रजिस्ट्रार ने फिर से बंसीलाल कुकरेजा को बहाल कर दिया।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06